पाठ 17. मानव बनो

पाठ का परिचय

कवि कहते हैं कि आज के युग में जीवन को जीने के लिए आवश्यक है कि हम आत्मनिर्भर बनें। किसी से प्यार करना या अनुनय-विनय करने से भी अधिक बड़ी भूल है किसी का सहारा ढूँढ़ना। कवि कह रहे हैं कि अब आँसू दिखाने या हाथ फैलाने का समय नहीं है। अपनी पूरी ताकत के साथ एक ऐसी ललकार करो (अपने सामर्थ्य का प्रदर्शन) कि सारी धरती ही काँप जाए। हानि उठाकर शोक प्रकट करने से ही तुम्हारा कर्तव्य पूरा नहीं हो जाता बल्कि अपनी आँखों से बहने वाले आँसुओं से इस धरती का हर कण हरा कर दो। अब समय आ गया है कि अपनी हार को मन में लेकर निराशा में हाथ मलना छोड़कर अपने सीने में प्रतिशोध की ज्वाला को जन्म दो ताकि इस धरती को स्वर्ग के समान बनाया जा सके।

पाठ में निहित जीवन-मूल्य

हार को स्वीकार कर निराशा में घिरकर नहीं बैठना है। कभी किसी सहारे के इंतज़ार में समय नहीं गँवाना है। कमज़ोर बनकर किसी से सहायता की माँग नहीं करनी है। मन में एक ऐसा जोश भरना है जिससे कुछ कर गुज़रने का हौसला बढ़े।

पाठ का वाचन

जोश से भरी इस कविता का वाचन मुक्त कंठ से सस्वर करें। बच्चों को अनुकरण करने को कहें। बच्चे इसे समूहगान के रूप में गाएँ। वाचन के दौरान कठिन शब्दों के अर्थ बताएँ। प्रत्येक पंक्ति का आशय स्पष्ट करते हुए कविता का सरलार्थ बताएँ।

महत्वपूर्ण चर्चा

निम्नलिखित प्रश्नों पर बच्चों से चर्चा करें–

- अपने प्रयासों से तुम देश को किस प्रकार लाभ पहुँचा सकते हो?
- मानव बनने के लिए कवि ने जो कुछ भी बताया है क्या वैसा कुछ भी तुम करते हो?
- बड़े होकर ऐसा क्या करोगे, जिससे देश, समाज और परिवार को तुम पर गर्व हो सके?